अध्याय
10

राष्ट्रीय आंदोलन

सीखने के प्रतिफल—

1870 के दशक से लेकर आजादी तक भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन की रूपरेखा तैयार कर लेंगे।

भारत का राष्ट्रीय आंदोलन लम्बे समय तक संचालित एक प्रमुख आंदोलन था, इस आंदोलन के औपचारिक शुरूआत 1885 ई. में कांग्रेस की स्थापना के साथ हुई। आगे चलकर इसी के नेतृत्व में विदेशी शासन से स्वतंत्रता के लिए एक लंबा और साहसपूर्ण संघर्ष चला। जो कुछ उतार–चढ़ाव के साथ 15 अगस्त 1947 ई. तक अनवरत रूप से जारी रहा। वर्ष 1857 ई. से भारतीय राष्ट्रवाद के उदय का प्रारम्भ माना जाता है।

यह देखा गया है कि भारत में स्वतंत्रता कई राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक कारकों के शृंखला का मेल था जिसने राष्ट्रवाद को बढ़ाने का कार्य किया।

© JCERT not to be republished

राष्ट्रवाद का उदय—

भारत में राष्ट्रवादी भावना 19वीं सदी के अंत और 20 वीं सदी के आरम्भ में विकसित हुई। ब्रिटिश सरकार का मानना था कि भारतीयों को राष्ट्रवादी सिद्धान्त से अंग्रेजों ने अवगत करवाया था। औपनिवेशिक नीतियों के प्रभाव और उनके विरोध के कारण भारत में राष्ट्रीयता का विकास हुआ। भारतीयों के द्वारा यह महसूस किया गया कि भारत उनकी मातृभूमि है और उस पर शासन करने का अधिकार भारतीयों का है।

भारत में राष्ट्रवाद के उदय के लिए कुछ परिस्थितियाँ जिम्मेदार थी, जो निम्नलिखित हैं—

औपनिवेशिक विस्तार से भारत में राजनीतिक एकता स्थापित हुई, ब्रिटिश शासन द्वारा अपने हितों की पूर्ति के उद्देश्य से किया गया रेलवे का विस्तार तथा डाक एवं प्रशासनिक व्यवस्था के चलते देश के विभिन्न भागों में रह रहे लोगों के बीच संपर्क संभव हो पाया वे एक दूसरे को विचारधारा से अवगत हो पाये और इससे राष्ट्रवाद को काफी बल मिला।

राष्ट्रवाद—

राष्ट्रवाद का शाब्दिक अर्थ है किसी क्षेत्र विशेष में रहने वाले लोगों या समुदायों का संगठन जिनमें एक विचारधारा या एकता की एक समान भावना होती है।

पाश्चात्य विचारों पर आधारित आधुनिक शिक्षा प्रणाली से भारतीय राजनीति में आत्मनिर्णय, स्वशासन, स्वतंत्रता, समानता, व्यक्तिवाद, मानवतावाद, राष्ट्रवाद तथा बंधुत्व जैसे—विचार महत्वपूर्ण हो गये। वे यूरोपीय राष्ट्रों के सम–सामयिक राष्ट्रवादी आंदोलनों का अध्ययन उसकी प्रशंसा तथा उनका अनुकरण करने लगे।

पाश्चात्य शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी भाषा थी यह भारतीयों के बीच आय भाषा बन गयी अंग्रेजी का ज्ञान होने पर भारतीय पाश्चात्य साहित्य व दर्शन से अवगत हुए। रूसो, मिल, मैजिनी, गैरीबाल्डी जैसे—लोगों के विचारों से अवगत हुए। भारतीय अपनी स्थिति की तुलना यूरोपीय देशों से करने के बाद अपनी बुरी स्थिति के लिए ब्रिटिशों को दोषी मानने लगे इससे भारतीयों में राष्ट्रवाद की भावना पनपने लगी।

प्रेस तथा समाचार पत्रों ने ब्रिटिश उपनिवेशवादी तंत्र की मानसिकता से लोगों को परिचित कराया तथा देशवासियों के मन में एकता की भावना को जाग्रत करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। अनेक अखबार अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषा में प्रकाशित हुए। अखबारों के माध्यम से भारतीयों को अपने विचार व्यक्त करने में आसानी हुई।

राजा राममोहन राय ने राष्ट्रीय प्रेस की स्थापना कर संवाद कौमुदी (बांग्ला) व मिरातुल अखबार (फारसी) जैसे—पत्रों का संपादन कर राजनीतिक जागरण की दिशा में पहल की।

हिन्दी में भारतेन्दु हरिश्चंन्द्र, तमिल में सुब्रह्मण्यम भारती, मराठी में विष्णु शास्त्री चिपलंकर, उर्दू में मिल्ताफ हुसैन हाली इस काल के कुछ प्रमुख राष्ट्रवादी लेखक थे।

© JCERT not to be republished

संवाद कौमुदी—

बंगाली साप्ताहिक समाचार पत्र था, यह सुधारवादी पत्र था जिसमें सती प्रथा की समाप्ति के लिए अभियान चलाया गया। 1821 में यह प्रकाशित हुआ, यह किसी भारतीय भाषा का पहला समाचार पत्र था।

मिरातुल अखबार—

12 अप्रैल 1822 ई. को प्रकाशित। यह शुक्रवार को साप्ताहिक आधार पर प्रकाशित होता था।

भारत में राष्ट्रीय जागृति पैदा करने में 19वीं शताब्दी में हुए सामाजिक तथा धार्मिक आंदोलनों का बहुत बड़ा हाथ रहा है। देश की सामाजिक तथा धार्मिक परिस्थितियाँ दिन–प्रतिदिन बिगड़ती ही जा रही थी। इन आंदोलनों ने एक ओर धर्म तथा समाज में व्याप्त बुराईयों को दूर करने का प्रयास के साथ दूसरी और भारत में राष्ट्रीयता की भाव भूमि तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ब्रह्म समाज, आर्य समाज, रामकृष्ण मिशन एवं थियोसोफिकल सोसायटी के प्रवर्तक क्रमशः राजा राममोहन राय, स्वामी दयानंद स्वामी विवेकानन्द एवं श्रीमती एनी बेसेन्ट ने भारतीयों में आत्मविश्वास जागृत किया।

(राजा राममोहन राय का भारतीय राष्ट्रीयता का अग्रदूत कहा जाता है।)

ब्रिटिश शासन ने भारतीय अर्थव्यवस्था को प्रभावित किया। अंग्रेजों के आर्थिक शोषण से भारत के लोग परेशान थे यहाँ के घरेलू उद्योग को ब्रिटिशों ने नष्ट कर इंग्लैण्ड से आयातित वस्तुएँ कर रहित तथा भारत की निर्यातित वस्तुओं पर कर लगाया गया।

अंग्रेजों को जिसकी जरूरत होती उसी का उत्पादन वह कृषकों से करवाते थे, इससे भारत का धन इंग्लैण्ड जाने लगा और भारत गरीब होने लगा। दादा भाई नौरोजी द्वारा अंग्रेजों के धन-निष्कासन सिद्धान्त के प्रति लोगों को जागरूक किया गया उनकी पुस्तक ''पॉवर्टी एंड अन ब्रिटिश रूल इन इंडिया'' में ब्रिटिश शासन के आर्थिक परिणामों की तीखी आलोचना की।

उपर्युक्त कारणों के अतिरिक्त कई अन्य तात्कालिक कारण भी थे। जिन्होंने राष्ट्रवाद की भावना को बढ़ावा दिया। लॉर्ड लिटन द्वारा अपने कार्यकाल में किये गये कार्य-वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट, आर्म्स एक्ट, I.C.S. परीक्षा की आयु 21 वर्ष से घटाकर 19 वर्ष कर देना इन सभी निर्णयों ने राष्ट्रवाद को जन्म दिया। रिपन के काल में लागू इल्बर्ट बिल को वापस लेना जिसमें भारतीय न्यायाधीश अंग्रेजों या यूरोपीय लोगों के मुकदमें की सुनवाई कर सकते थे। इससे भारतीयों में यह संदेश व्याप्त हो गया कि अंग्रेज भारतीयों से समान व्यवहार नहीं करते है।

अत: ये सभी परिस्थितियाँ भारत में राष्ट्रवाद के उदय के लिए जिम्मेवार रहीं।

© JCERT not to be republished

स्वमूल्यांकन

(1) दादा भाई नौरोजी की किस पुस्तक में धन निष्कासन सिद्धान्त की जानकारी दी गयी है ?

(2) मराठी के राष्ट्रवादी लेखक का नाम बताएँ।

(3) संवाद कौमुदी समाचार पत्र कब प्रकाशित हुआ ?

(4) भारतीय राष्ट्रीयता का अग्रदूत किन्हें कहा जाता है ?

(5) मिरातुल अखबार पत्र के संपादक कौन थे ?

उत्तर—(1) पावर्टी एंड अन ब्रिटिश रूल इन इंडिया, (2) विष्णु शास्त्री चिपलंकर, (3) 1821 ई. (4) राजा राममोहन राय, (5) राजा राममोहन राय।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना (1885 ई.)—

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना आधुनिक भारतीय इतिहास में एक महत्वपूर्ण घटना थी, इस संगठन के नेतृत्व में भारत का स्वतंत्रता आंदोलन चला।

ए. ओ. ह्यूम. नामक एक अवकाश प्राप्त ब्रिटिश अधिकारी ने 28 दिसम्बर 1885 ई. को गोकुलदास तेजपाल संस्कृत कॉलेज बम्बई में कलकत्ता विश्वविद्यालय के स्नातकों को पत्र लिखकर बुलाया और कांग्रेस की स्थापना की दादाभाई नौरोजी और दिनशा वाचा भी संस्थापकों में शामिल थे।

यह कहा जाता है कि कांग्रेस की स्थापना के पीछे ह्यूम का प्रमुख उद्देश्य शिक्षित भारतीयों के बढ़ रहे असंतोष की सुरक्षित निकासी के लिए एक "सेफ्टी बाल्व" बनाना था। वे असंतुष्ट राष्ट्रवादी शिक्षित वर्गो तथा असंतुष्ट किसान के आपसी मेल को रोकना चाहते थे।

कांग्रेस के प्रथम अधिवेशन के अध्यक्ष व्योमेश चंद्र बनर्जी थे, इस अधिवेशन में 72 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इसके प्रारम्भिक नेतृत्वकर्त्ताओं में दादाभाई नौरोजी, फिरोजशाह मेहता, बदरूद्दीन तैय्यब जी, डब्ल्यू. सी. बनर्जी, सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, रोमेश चन्द्र दत्त, एस. सुबह्मण्यम् अय्यर शामिल थे।

यह भी जानें—

- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के पिता एलन आक्टेवियन ह्यूम को कहा जाता है।
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का प्रथम अधिवेशन बम्बई में 1885 ई. में हुआ इसके अध्यक्ष व्योमेश चन्द्र बनर्जी थे।
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की अध्यक्षता करने वाले प्रथम मुस्लिम अध्यक्ष (1887 ई.) बदरूद्दीन तैयबर्जी थे।
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रथम अंग्रेज अध्यक्ष (1888 ई. ?) जॉर्ज यूल थे।
- कलकत्ता विश्वविद्यालय की पहली महिला स्नातक कादंबिनी गांगुली ने कांग्रेस अधिवेशन को 1890 ई. में संबोधित किया।
- एनी बेसेंट को 1917 ई. में कोलकाता में कांग्रेस की पहली महिला अध्यक्ष चुना गया।
- 1924 ई. का कांग्रेस अधिवेशन जो बेलगाँव (कर्नाटक) में हुआ इस अधिवेशन के अध्यक्ष महात्मा गाँधी थे।
- 1940 ई. में रामगढ़ में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का महत्वपूर्ण अधिवेशन हुआ इसकी अध्यक्षता मौलाना अबुल कलाम आजाद द्वारा की गयी। इस अधिवेशन में "अंग्रेजों भारत छोड़ों" आंदोलन की नींव पड़ी।

स्व. मूल्यांकन—

(1) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के पिता कौन है ?

(2) कांग्रेस के प्रथम अधिवेशन में कितने प्रतिनिधियों ने भाग लिया ?

(3) किस महिला ने 1890 ई. के कांग्रेस अधिवेशन को संबोधित किया था ?

(4) महात्मा गाँधी कांग्रेस के अध्यक्ष किस अधिवेशन में बने ?

© JCERT not to be republished

(5) किस कांग्रेस अधिवेशन में "अंग्रेजों भारत छोड़ों" आंदोलन की नींव पड़ी ?

उत्तर—(1) ए. ओ. ह्यूम, (2) 72 प्रतिनिधि, (3) कांदबिनी गांगुली, (4) 1940 ई., (5) 1940 ई. के रामगढ़ अधिवेशन।

राष्ट्रीय आंदोलन के चरण—

भारत के राष्ट्रीय आंदोलन को तीन चरणों में बाँटा जा सकता है—

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन		
प्रथम चरण	**द्वितीय चरण**	**तृतीय चरण**
(1885-1905 ई.)	(1905-1919 ई.)	(1919-1947 ई.)
(उदारवादी युग)	**(उग्रवादी युग)**	**(गाँधी युग)**

आंदोलन का प्रथम चरण (1888 ई. 1905 ई.)—

इस काल में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना हुई। 1885 ई. में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना के साथ ही इस पर उदारवादी राष्ट्रीय नेताओं का वर्चस्व स्थापित हो गया। तत्कालीन उदारवादी नेताओं में प्रमुख थे दादाभाई नौरोजी, महादेव गोविन्द रानाडे, फिरोजशाह मेहता आदि। इन्हें प्राय: नरमपंथी राष्ट्रवादी कहा गया। ये सभी पश्चिमी विचारों और सिद्धान्तों से अत्यधिक प्रभावित थे। इनको ब्रिटिश शासन पर पूरा भरोसा था वे मानते थे कि भारत का उद्धार ब्रिटिश शासन के तहत हो सकता है। भारत को स्वशासन की बजाय सामाजिक सुधारों की आवश्यकता है, इन्हें सुधारक भी कहा गया।

कांग्रेस की स्थापना के आरंभिक 20 वर्षो में उसकी नीति अत्यन्त उदार थी इसीलिए इस काल को कांग्रेस के इतिहास में "उदारवादी राष्ट्रीयता का काल" माना जाता है।

नरमपंथियों ने ब्रिटिश औपनिवेशिक नीति का विरोध शांतिपूर्ण से किया। ये अपनी माँगों को पूरा करवाने के लिए सरकार को आवेदन देते थे। परन्तु सरकार उनको पूरा नहीं करती थी। ऐसे में उन्होंने अखबार लेख और भाषण के द्वारा सरकार की आलोचना की। देश के विभिन्न क्षेत्रों में जाकर लोगों को सरकार की नीतियों से अवगत कराया। उदारवादियों के प्रयासों के कारण ही 1892 ई. का भारतीय परिषद अधिनियम पारित किया गया जिससे भारतीयों को परिषदों में सदस्यता तो मिली परन्तु अधिकार नहीं मिले। कांग्रेस ने भारतीयों की समस्या का निवारण करने के लिए समय-समय पर प्रतिनिधि मंडल ब्रिटेन भेजा। ब्रिटिश सरकार कांग्रेस से भयभीत होने लगी थी क्योंकि वह अपनी माँगों को मजबूती से सरकार के सामने रखने लगी।

© JCERT not to be republished

कांग्रेस को कमजोर करने के लिए सरकार ने ''फूट डालों और राज करों'' की नीति का अनुसरण किया। मध्यम वर्ग का समर्थन कांग्रेस को होने के कारण ब्रिटिश सरकार कांग्रेस का दमन कर पाने में सक्षम नहीं हुई।

अपने उद्देश्य की पूर्ति में नरमदल पूरी तरह से सफल नहीं हो पायी इसके लिए कई आंदोलन किया गया परन्तु इसने भारतीयों में जागरूकता लाने का प्रयास किया तथा प्रजातांत्रिक मूल्यों और धर्म निरपेक्षता से लोगों को अवगत करवाया।

स्व.मूल्यांकन

(1) राष्ट्रीय आंदोलन का प्रथम चरण कब-से-कब तक हो ?

(2) भारतीय परिषद अधिनियम कब पारित किया गया ?

(3) दो उदारवादी नेताओं के नाम लिखे।

(4) राष्ट्रीय आंदोलन के प्रथम चरण को कांग्रेस के इतिहास में क्या कहा जाता हैं ?

(5) नरमपंथियों द्वारा ब्रिटिश औपनिवेशिक नीति का विरोध किस तरीके से किया गया ?

उत्तर—(1) 1885 ई.– 1905 ई., (2) 1892 ई, (3) दादा भाई नौरोजी, महादेव गोविन्द रानाडे, (4) उदारवादी राष्ट्रीयता का काल, (5) शांतिपूर्ण तरीके से।

द्वितीय चरण (1905 ई. – 1919 ई.)

1905 ई. से भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का दूसरा चरण प्रारम्भ होता है जिससे उग्रवादी युग की संज्ञा दी गयी। ब्रिटिश साम्राज्यवाद को वरदान मानने वाले तथा उनकी न्यायप्रियता में अटूट विश्वास रखने वाले उदारवादी नेताओं का विश्वास टूटकर बिखर गया। उस समय कांग्रेस में एक नये तरूण वर्ग का उदय हुआ जो प्रार्थना के बदले संघर्ष का मार्ग अपनाने को आतुर था।

उग्रवादी दल के नेताओं में प्रमुख थे—

बाल गंगाधार तिलक, लाला लाजपत राय, विपिनचंद्र पाल (बाल-लाल-पाल) एवं अरविन्द घोष। इनका मानना था कि भारतीयों को अपनी माँगों को पूरा करने के लिए संघर्ष करना पड़ेगा। उन्होंने स्वराज (स्वशासन) पर जोर दिया। बाल गंगाधर तिलक मानते थे—''अच्छी विदेशी सरकार की अपेक्षा हीन स्वदेशी सरकार श्रेष्ट है एवं स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है, इसे मैं लेकर रहूँगा।'' तिलक ने ''गणपति उत्सव'' एवं ''शिवाजी उत्सव'' को शुरू करवा कर भारतीयों में राष्ट्रीय चेतना के प्रसार की दिशा में प्रयास किया।

© JCERT not to be republished

यह भी जानें—

- गणपति उत्सव की शुरूआत 1893 ई. में महाराष्ट्र से लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने की। तिलक इस उत्सव के माध्यम से अपनी बात को ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहुँचाना चाहते थे। जिससे आम जनता को स्वराज के लिए संघर्ष की प्रेरणा प्राप्त हुई।
- शिवाजी उत्सव की शुरूआत 1895 ई. में बाल गंगाधर तिलक द्वारा किया गया था।

बंगाल विभाजन (1905 ई.)—

बंगाल उस समय राष्ट्रीय चेतना का गढ़ बना हुआ था और साथ ही भारतीयों में प्रबल राजनैतिक जागृति थी जिसे कुचलने के लिए लार्ड कर्जन ने 20 जुलाई 1905 ई. को एक आज्ञापत्र जारी करके बंगाल को दो भागों में विभाजित कर दिया। पहले भाग में पूर्वी बंगाल और असम दूसरे भाग में शेष बंगाल था। बंगाल विभाजन 16 अक्टूबर 1905 ई. से प्रभावी हुआ। इतिहास में इसे बंग-भंग के नाम से भी जाना जाता है।

© JCERT not to be republished

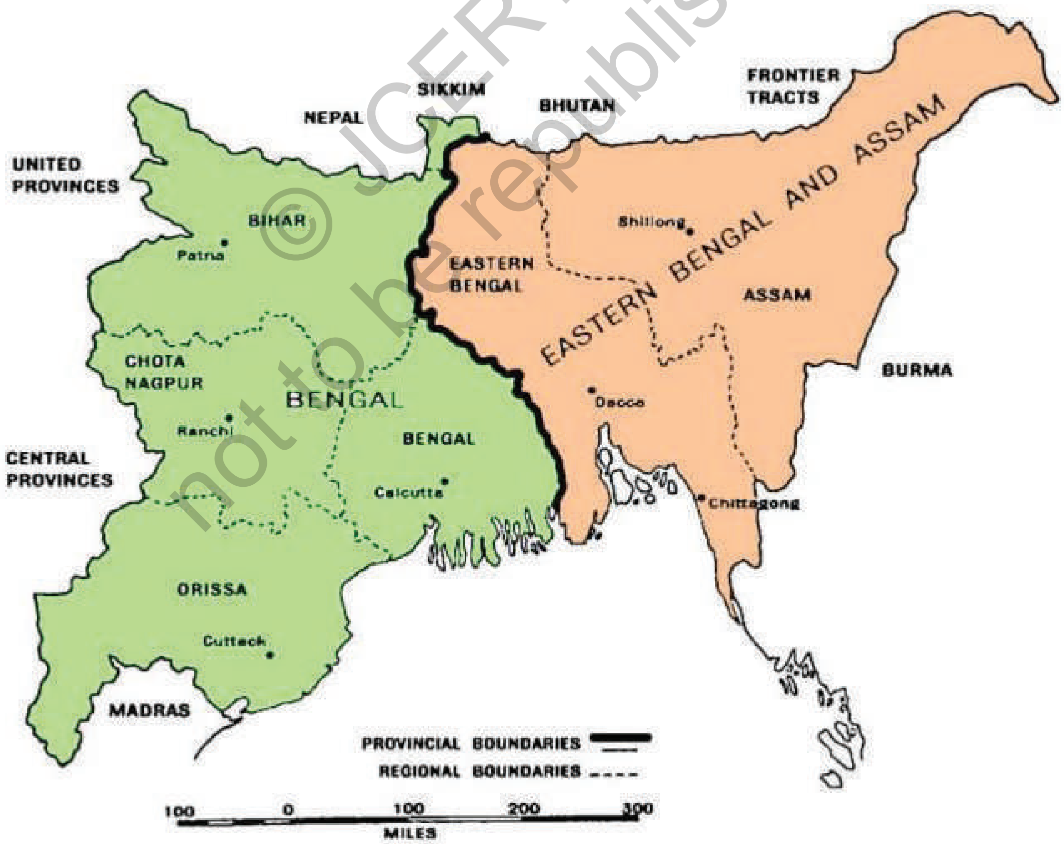

बंग-भंग के विरूद्ध बंगाल के बाहर भी आंदोलन हुए। इस आंदोलन में देश के प्रसिद्ध कवियों और साहित्यकारों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस आंदोलन में "वंदे मातरम्" के गीत गाये गये। उस समय बंगाल को बाँट देने का अंग्रेजी कुचक्र तो टूटा ही सारे देश और विदेशी में इसे असाधारण ख्याति मिली। जर्मनी और कनाडा जैसे देश भी इससे प्रभावित हुए। कामागाटामारू नामक जहाज के झंडे पर "वंदे मातरम्" अंकित किया गया था। 1930 ई. के नमक सत्याग्रह और सन् 1942 ई. के "भारत छोड़ों" आंदोलन तक सभी संप्रदायों से उभरे युवा स्वतंत्रता संग्राम सैनिकों का प्रिय नारा "वंदे मातरम्" रहा।

इसी समय रविन्द्रनाथ टैगोर ने "आमार सोनार बांग्ला" गीत लिखा जो बांग्लादेश का राष्ट्रीय गीत बन गया।

यह भी जानें—

- कामागाटामारू— यह भाप इंजन से चलने वाला एक जापानी समुद्री जहाज था।
- 1972 ई. में बांग्लादेश ने "आमार सोनार बांग्ला" को राष्ट्रीय गीत के रूप में स्वीकारा।
- वंदे मातरम् गीत बंकिम चंद्र चटर्जी ने लिखा।

© JCERT not to be republished

स्वदेशी तथा बहिष्कार आंदोलन—

स्वदेशी तथा बहिष्कार आंदोलन बंगाल विभालन का ही विरोध जताने के लिए चलाया गया। 7 अगस्त 1905 ई. में कलकत्ता के टाउनहॉल में एक विशाल बैठक आयोजित की गई जिसमें स्वदेशी आंदोलन की औपचारिक घोषणा की गई।

मैनचेस्टर में निर्मित कपड़ों तथा लिवरपूल के नमक जैसे—सामानों के बहिष्कार का संदेश प्रचारित किया गया। लोगों ने शिक्षण संस्थाओं, नौकरियों, न्यायालय, परिषद सेना के पद या पदवीं आदि का बहिष्कार किया। इस आंदोलन में सभी वर्गो ने भाग लिया। महिलाओं तथा छात्रों ने भी इसमें भाग लिया। विदेशी के स्थान पर स्वदेशी अपनाना स्वदेशी आंदोलन का मूलमंत्र था।

स्वदेशी आंदोलन के प्रसार में अरविन्द घोष, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, लोकमान्य बाल गंगाधार तिलक और लाला लाजपत राय जैसे—नेता शामिल थे पर ब्रिटिश सरकार ने दमनकारी नीति अपनाते हुए तिलक को गिरफ्तार कर 6 साल कारावास की सजा दी। इससे स्वदेशी आंदोलन कमजोर हो गया, पर इस आंदोलन द्वारा भारत में राष्ट्रीयता की भावना अधिक विकसित हो चुकी थी।

यह भी जाने—

महात्मा गाँधी ने स्वदेशी आंदोलन को ''स्वराज की आत्मा'' कहा है।

स्वमूल्यांकन—

(1) स्वदेशी आंदोलन का मूलमंत्र .... था।

(2) आमार सोनार बांग्ला .... के द्वारा लिखा गया।

(3) बंगाल विभाजन .... से प्रभावी हुआ ?

(4) स्वदेशी आंदोलन की घोषणा .... को की गयी।

(5) गणपति उत्सव तथा शिवाजी उत्सव .... द्वारा प्रारम्भ किया गया।

उत्तर—(1) विदेशी के स्थान पर स्वदेशी अपनाना।,

(2) रविन्द्रनाथ टैगोर

(3) 16 अक्टूबर 1905 ई.

(4) 7 अगस्त 1905 ई.

(5) बाल गंगाधर तिलक।

फूट डालो और शासन करो—

स्वदेशी आंदोलन के कमजोर होने, नरमदल, द्वारा बहिष्कार नीति का विरोध और कांग्रेस के 1907 में विभाजन इन सभी से अंग्रेजी सरकार ने लाभ उठाया। सरकार ने हिन्दू और मुस्लिम एकता तोड़ने के लिए ''फूट डालो और शासन करो'' की नीति अपनाई।

1906 में ढाका के नवाब सनीमुल्लाह के नेतृत्व में मुसलमानों ने अखिल भारतीय मुस्लिम लीग की स्थापना की। लीग के गठन में अंग्रेजों ने सहायता की।

पंजाब के लोगों ने विरोध में हिन्दू सभा की स्थापना किया जिसका विस्तार 1915 में हिन्दू महासभा के रूप में किया गया। इसका बुरा प्रभाव राष्ट्रीय आंदोलन पर पड़ा।

लीग का उद्देश्य मुसलमानों के राजनीतिक हितों की रक्षा करना था लीग ने मुसलमानों के लिए आरक्षण तथा पृथक निर्वाचन क्षेत्र की माँग की जिसे 1909 ई. में मार्ले मिंटो सुधार में मान लिया गया। लीग द्वारा बंगाल विभाजन का समर्थन किया गया।

1916 में कांग्रेस के दोनों खेमे एक हो गये और कांग्रेस का लीग के साथ लखनऊ समझौता हुआ। इसके बावजूद परस्पर विरोधी विचारधारा वाले इन दलों के सांप्रदायिक विचारों के कारण राष्ट्रीय आंदोलन कमजोर पड़ गया।

© JCERT not to be republished

सरकार ने बंगाल विभाजन के विरोध से स्वयं को सुरक्षित रखने के लिए 1911 ई. में बंगाल विभाजन रद्द कर दिया।

- बंगाल विभाजन के समय लार्ड कर्जन भारत के वायसराय थे।
- बंगाल विभाजन 1911 ई. में रद्द हुआ उस समय लार्ड हार्डिंग थे।

वायसराय—

एक शाही अधिकारी होता है जो एक देश या प्रांत पर शासन करता है। यह शासन किसी मुख्य शासक के नाम पर होता है।

स्वमूल्यांकन

(1) कांग्रेस का विभाजन कब हुआ ?

(2) बंगाल विभाजन के समय भारत के वायसराय कौन थे ?

(3) अखिल भारतीय मुस्लिम लीग की स्थापना कब हुई ?

(4) अंग्रेजों ने हिन्दू-मुस्लिम एकता को तोड़ने के लिए कौन सी नीति अपनायी ?

(5) हिन्दू सभा का विस्तार किस रूप में हुआ ?

उत्तर—(1) 1907 ई., (2) लॉर्ड कर्जन, (3) 1906 ई., (4) फूट डालो और शासन करो, (5) हिन्दू महासभा।

© JCERT not to be republished

1907 में कांग्रेस का विभाजन (सूरत अधिवेशन)	
गरम दल	नरम दल
नेता— बालगंगाधर तिलक	नेता— मोतीलाल नेहरू

तृतीय चरण (1919-1947 ई.)—

सरकार का दमन और साथ में जनता को कुशल नेतृत्व देने में नेताओं की असफलता के कारण उपजी कुंठा जैसी बातों ने क्रांतिकारी आतंकवाद को जन्म दिया। क्षेत्रों दलों की नीतियों से असंतुष्ट युवा राष्ट्रवादियों ने हिंसात्मक तरीके से ब्रिटिश सरकार का विरोध किया। इनके सिद्धान्त भिन्न थे, परन्तु उद्देश्य एक था— मातृभूति की स्वतंत्रता।

इस काल में महात्मा गाँधी के नेतृत्व में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने पूर्ण स्वराज्य की प्राप्ति के लिए आंदोलन प्रारम्भ किया। गाँधी जी के इस कार्यकाल के भारतीय इतिहास में गाँधी युग के नाम से जाना जाता है।

रौलेट एक्ट (8 मार्च 1919 ई.)—

इसे काला कानून कहा जाता है। भारत की ब्रिटिश सरकार द्वारा भारत में उभर रहे राष्ट्रीय आंदोलन को कुचलने के लिए बनाया गया। ये कानून सर सिडनी रौलेट की अध्यक्षता वाली सेडिशन समिति की सिफारिशों के आधार पर बनाया गया था। 8 मार्च 1919 ई. को यह लागू किया गया था। इस कानून के तहत ब्रिटिश सरकार को ये अधिकार प्राप्त हो गया था कि यह किसी भारतीय पर अदालत में बिना मुकदमा चलाए उसे जेल में डाल सकती थी। इस कानून का पूरे भारत में जमकर विरोध किया गया।

जलियाँवाला बाग हत्याकांड (13 अप्रैल 1919 ई.)—

जालियाँवाला बाग हत्याकांड भारत में पंजाब प्रांत के अमृतसर में स्वर्ण मंदिर के निकट जालियाँवाला बाग में 13 अप्रैल 1919 ई. को बैशाखी के दिन हुआ था। लोगों का जनसमूह अपने लोकप्रिय नेताओं डॉक्टर सैफुद्दीन किचलू और डॉक्टर सत्यपाल की गिरफ्तारी का विरोध करने के लिए जालियाँवाला बाग में जमा हुए थे।

इस सभा पर जनरल डायर नामक एक अंग्रेज अफसर ने बिना चेतावनी के भीड़ पर गोली चलवा दी। जिसमें 400 से अधिक व्यक्ति मारे गये और 2000 से अधिक लोग घायल हुए।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम पर इस जघन्य हत्याकांड ने काफी प्रभाव डाला। यह घटना ही भारत में ब्रिटिश शासन के अंत की शुरूआत बनी। रविन्द्रनाथ टैगोर ने जालियाँवाला बाग हत्याकांड के विरोध में ''नाइटहुड'' की उपाधि वापस कर दी, उन्हें यह उपाधि ब्रिटिश प्रशासन ने 1915 ई. में दी थी।

यह भी जानें—

जिस व्यक्ति को नाइटहुड की उपाधि दी जाती थी, उसके नाम के साथ ''सर'' लगाया जाता था।

© JCERT not to be republished

स्व-मूल्यांकन

(1) तृतीय चरण को किस नाम से जाना जाता है ?

(2) रॉलेट एक्त .... को लागू हुआ।

(3) जालियाँवाला बाग .... में स्थित है ?

(4) जालियाँवाला बाग में भीड़ पर गोली किसने चलवाई ?

(5) .... ''नाइट हुड'' की उपाधि वापस कर दी।

उत्तर—(1) गाँधी युग, (2) 8 मार्च 1919 ई., (3) पंजाब के अमृतसर में, (4) जनरल डायर, (5) रविन्द्रनाथ टैगोर ने।

खिलाफल आंदोलन और असहयोग आंदोलन—

इस आंदोलन के राष्ट्रीय आंदोलन में एक नई धारा बही। यह आंदोलन 1919 ई. – 1922 ई. के मध्य भारत में मुस्लिम बहुसंख्यक वर्ग द्वारा चलाया गया राजनीतिक-धार्मिक आंदोलन था।

इस आंदोलन का मुख्य उद्देश्य मुस्लिमों के मुखिया माने जाने वाले टर्की के खलीफा के पद की पुन: स्थापना कराने के लिए ब्रिटिश सरकार पर दबाव डालना था। यह आंदोलन मौलाना मोहम्मद अली, शौकत अली एवं अबुल कलाम आजाद के सहयोग से चलाया गया। यह आंदोलन सन् 1919 ई. में लखनऊ से शुरू हुआ था।

© JCERT not to be republished

यह भी जानें—

- प्रथम विश्व युद्ध (1914 – 1918 ई.) के बाद तुर्क साम्राज्य विभाजित हो गया और तुर्की को अलग कर दिया गया तथा खलीफा को सत्ता से हटा दिया गया था इससे मुस्लिम नाराज हो गए तथा इसे खलीफा का अपमान माना।

गाँधीजी ने 23 नवम्बर 1919 ई. को दिल्ली में अखिल भारतीय खिलाफत समिति का अधिवेशन स्वयं की अध्यक्षता में किया। मार्च 1920 को इलाहाबाद में हिन्दुओं और मुस्लिमों की समुच्च बैठक में असहयोग आंदोलन चलाये जाने का निर्णय लिया गया। 1 अगस्त 1919 ई. को महात्मा गाँधी द्वारा असहयोग आंदोलन की घोषणा की गई। इसे खिलाफत आंदोलन के समर्थन में शुरू किया गया। यह आंदोलन भारत के पहले व्यापक जन आंदोलन के रूप में गाँधी के नेतृत्व में चला।

गाँधी जी ने अली बंधुओं के साथ राष्ट्रीय एकता का प्रसार करने और सरकार के साथ असहयोग करने के संदेश ''कैसर-ए-हिन्द'' की उपाधि छोड़ दी। विदेशी वस्त्रों, नौकरियों, स्कूल-कॉलेज, सरकारी उत्सवों,

उपाधियों को त्यागने का आह्वान किया। इस दौरान हिन्दू-मुस्लिम एकता देखी गई। डॉ. अंसारी, अली बंधु और मौलाना आजाद जैसे मुस्लिम नेताओं ने भाग लिया। छात्र, मध्यम वर्ग, व्यवसायी वर्ग, कृषक वर्ग और महिलाओं ने भी इस आंदोलन में भाग लिया महिलाओं ने पर्दा प्रथा का त्याग किया।

दिसम्बर 1921 ई. के अहमदाबाद में हुए कांग्रेस अधिवेशन में आंदोलन को तीव्र करने का निश्चय किया गया।

5 फरवरी 1922 ई. में उत्तर प्रदेश के गोरखपुर जिले के चौरी-चौरा स्थान पर, भीड़ और थाने के पुलिस कर्मियों के मध्य हुए संघर्ष के बाद हिंसक भीड़ ने एक पुलिस चौकी में आग लगा दिया जिसमें 22 पुलिसकर्मी जिंदा जल गये। इस खबर ने गाँधी जी को झकझोर कर रख दिया। आंदोलन में तेजी से बढ़ती हिंसक प्रवृत्ति से नाखुश होकर उन्होंने तुरन्त आंदोलन को वापस लेने की घोषणा कर दी।

10 मार्च 1922 ई. को गाँधीजी को गिरफ्तार कर लिया गया और उन पर राजद्रोह के आधार पर मुकदमा चलाकर 6 वर्ष को सजा दी गई।

असहयोग आंदोलन के बाद खिलाफत आंदोलन को 1924 ई. में समाप्त कर दिया गया।

असहयोग आंदोलन के खत्म होने के बाद गाँधीजी के अनुयायी ग्रामीण इलाके में रचनात्मक कार्य शुरू करने पर जारे देने लगे। बीस के दशक के मध्य में गाँवों में किये गये व्यापक सामाजिक कार्यो को बदौलत गाँधीवादियों को अपना जनाधार फैलाने में काफी मदद मिली। 1930 ई. में शुरू किये गये सविनय अवज्ञा आंदोलन के लिये यह जनाधार काफी उपयोगी साबित हुआ।

© JCERT not to be republished

यह भी जाने—

- महात्मा गाँधी को ''कैसर-ए-हिन्द'' की उपाधि ब्रिटिश सरकार ने 1915 ई. में दी यह उपाधि महात्मा गाँधी के प्रथम विश्व युद्ध के दौरान उनकी सेवाओं के लिए दी गयी थी।

जरा सोचिये—

- 4 फरवरी 2022 को भारतीय आंदोलन से संबंधित किस घटना के 100 वर्ष पूरे हुए ?

स्वमूल्यांकन—

(1) मुस्लिमों के मुखिया किन्हें माना जाता था ?

(2) खिलाफत आंदोलन 1919 ई. में .... से आरम्भ हुआ।

(3) प्रथम विश्व युद्ध .... से .... ई. तक चला।

(4) गाँधीजी द्वारा .... की उपाधि त्याग दी गयी।

(5) गाँधीजी को कब गिरफ्तार किया गया ?

उत्तर—(1) तर्की के खलीफा, (2) लखनऊ, (3) 1914 से 1918 ई., (4) केसर-ए-हिन्द, (5) 10 मार्च 1922 ई.।

सविनय अवज्ञा आंदोलन—

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के इतिहास में सविनय अवज्ञा आंदोलन महत्वूपर्ण आंदोलन रहा। इस आंदोलन की शुरूआत दांडी मार्च से हुई।

दांडी मार्च, जिसे नमक मार्च और दांडी सत्याग्रह के नाम से भी जाना जाता है, मोहनदास कमरचन्द गाँधी के नेतृत्व में किया गया एक अहिंसक सविनय अवज्ञा आंदोलन था। इसे 12 मार्च 1930 ई. से 6 अप्रैल 1930 ई. तक नमक पर ब्रिटिश एकाधिकार के खिलाफ कर प्रतिरोध और अहिंसक विरोध के प्रत्यक्ष कार्यवाई अभियान के रूप में चलाया गया।

गाँधीजी ने 12 मार्च को साबरमती आश्रम से दांडी तक 78 अनुयायियों के साथ 241 मील की यात्रा की। इस यात्रा का उद्देश्य गाँधी और उनके समर्थकों द्वारा समुद्र के जल से नमक बनाकर ब्रिटिश नीति का उल्लंघन करना था।

इस आंदोलन में सभी वर्गो ने भाग लिया किसान, महिला, आदिवासियों ने भी भाग लिया। कांग्रेस ने कर बंदी, शराब बंदी, विदेशी कपड़ों का बहिष्कार आंदोलन प्रारम्भ किया सारे देश में एक सशक्त जन आंदोलन चलने लगा।

आंदोलन की बढ़ती कार्यवाही देखकर ब्रिटिश शासन ने बंदी नेताओं को छोड़ने का आश्वासन दिया बशर्ते की कांग्रेस सविनय अवज्ञा आंदोलन स्थगित करे उसका आधार गाँधी-इर्विन समझौता हुआ। 5 मार्च 1931 ई. को गाँधी-इर्विन समझौता के बाद यह आंदोलन समाप्त कर दिया गया लेकिन द्वितीय गोलमेज सम्मेलन से निराशा प्राप्त होने के बाद गाँधीजी ने 3 जनवरी 1932 ई. को सविनय अवज्ञा आंदोलन पुनः प्रारम्भ किया। यद्यपि कांग्रेस ने वर्ष 1934 ई. में इस आंदोलन को वापस ले लिया।

26 जनवरी 1930 ई. को स्वतंत्रता दिवस मनाया गया जिसके अंतर्गत विभिन्न स्थानों पर राष्ट्रीय ध्वज फहराकर देशभक्ति के गीत गाए गये।

© JCERT not to be republished

स्वमूल्यांकन—

(1) दांडी मार्च .... के नाम से भी जाना जाता है।

(2) .... आंदोलन की शुरूआत दांडी मार्च से हुई।

(3) .... आश्रम से दांडी मार्च प्रारम्भ हुआ।

(4) दांडी मार्च द्वारा .... का उल्लंघन किया गया।

(5) .... में सविनय अवज्ञा आंदोलन वापस ले लिया गया।

उत्तर—(1) नमक मार्च, (2) सविनय अवज्ञा, (3) साबरमती, (4) नमक कानून, (5) 1934 ई.।

भारत छोड़ो आंदोलन (1942 ई.)—

इस आंदोलन को भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का आखिरी सबसे बड़ा आंदोलन माना जाता है, जिसमें सभी भारतवासियों ने एक साथ बड़े स्तर पर भाग लिया।

14 जुलाइ 1942 ई. को वर्धा में कांग्रेस की कार्यकारिणी समिति ने "अंग्रेजों भारत छोड़ो आंदोलन" का प्रस्ताव पारित किया गया। 8 अगस्त 1942 ई. को अखिल भारतीय कांग्रेस की बैठक (मुंबई) के ग्वालिया टैक मैदान में हुई ओर "भारत छोड़ो आन्दोलन" प्रस्ताव को मंजूरी मिल गयी। इस आंदोलन को अगस्त क्रांति के नाम से भी जाना जाता है, इस आंदोलन का लक्ष्य भारत से ब्रिटिश साम्राज्य को समाप्त करना था।

© JCERT not to be republished

भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान "अंग्रेजों भारत छोड़ों एवं "करो या मरो" भारतीयों का नारा बन गया।

आंदोलन शुरू होते ही सभी बड़े नेता गिरफ्तार किये गये। गाँधी जी को पूणे के "आगा खाँ पैलेस" में रखा गया और अन्य को अहमद नगर दुर्ग में रखा गया। अरूणा आसफ अली, जयप्रकाश नारायण, राम मनोहर लोहिया जैसे—नेताओं ने भूमिगत होकर इस आंदोलन का नेतृत्व किया।

सरकार ने इस आंदोलन को कुचलने का पूरा प्रयास किया और सरकार इसमें काफी हद तक सफल भी रही। इस आंदोलन ने यह दिखाया कि देश में राष्ट्रवादी भावनाएँ किस गहराई तक अपनी जड़े जमा चुकी थी। यह स्पष्ट हो चुका था कि जनता की इच्छा के विरुद्ध भारत पर शासन कर सकना अब संभव नहीं।

स्वमूल्यांकन—

(1) भारत छोड़ो आंदोलन .... ई. में हुआ।

(2) भारत छोड़ो आंदोलन को .... के नाम से जानते है।

(3) गाँधीजी को पूणे के .... पैलेस में रखा गया।

(4) .... में करो या मरों का नारा दिया गया।

उत्तर—(1) 1942 ई, (2) अगस्त क्रांति, (3) आगा खाँ, (4) भारत छोड़ो आंदोलन

स्वतंत्रता और विभाजन—

1940 ई. में मुस्लिम लीग ने देश के पश्चिमोत्तर तथा पूर्वी क्षेत्रों में मुसलमानों के लिए ''स्वतंत्र राज्यों'' की माँग करते हुए एक प्रस्ताव पारित किया। इस प्रस्ताव में विभाजन या पाकिस्तान का जिक्र नहीं था। वे मुस्लिमों के लिए एक स्वायत्त व्यवस्था की माँग कर रहे थे।

1930 के दशक के आखिरी सालों से लीग मुसलमानों और हिन्दुओं को अलग-अलग राष्ट्र मानने लगी। 1946 के प्रांतीय चुनाव में मुसलमानों के लिए आरक्षित सीटों पर लीग की सफलता मिलने के बाद ''पाकिस्तान की माँग'' पर चलती रही।

26 जुलाई 1945 ई. को क्लेमेंट एटली ने सत्ता संभाली। 15 फरवरी 1946 ई. को तीन सदस्यीय कैबिनेट मिशन पाकिस्तान की माँग का अध्ययन करने और स्वतंत्र भारत के लिए एक सही राजनीतिक बंदोबस्त सुझाने के लिए भारत भेजा गया। इस मिशन ने भारत को अविभाजित रहने और मुस्लिम बहुत क्षेत्रों को कुछ स्वायत्तता देते हुए एक ढीले-ढाले महासंघ के रूप में संगठित करने का सुझाव दिया। परन्तु कांग्रेस और मुस्लिम लीग मानने को तैयार नहीं थी।

मुस्लिम लीग ने पाकिस्तान की अपनी माँग मनवाने के लिए जनांदोलन शुरू करने का फैसला लिया। 16 अगस्त 1946 ई. को ''प्रत्यक्ष कार्रवाई दिवस'' मनाने का आह्वान किया। कई हिस्सों में दंगे हुए जो कई दिन चले और हजारों लोग की जान गई।

20 फरवरी 1947 ई. को ब्रिटेन के प्रधानमंत्री कलेमेंट एटली ने घोषणा की। कि ब्रिटेन जून 1948 ई. तक भारत का शासन छोड़ देगी। लॉर्ड माउंटबेटन मार्च 1947 ई. में वायसराय बनकर भारत आये और उन्होंने कांग्रेस और मुस्लिम लीग के नेताओं से इस मुद्दे पर चर्चा की उन्होंने भारत के विभाजन और भारत के साथ पाकिस्तान नामक नये राज्य की स्थापना की बात कही। राष्ट्रवादियों ने मजबूर होकर भारत का विभाजन स्वीकारा पर उन्होंने दो राष्ट्रों का सिद्धान्त नहीं माना।

माउंटबेटन इस समस्या को सुलझाने के लिए लंदन गये और भारत आने पर एक योजना प्रस्तुत की जिससे माउंटबेटन योजना कहा गया। भारत 15 अगस्त 1947 ई. को एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में अस्तित्व में आया और पाकिस्तान 14 अगस्त को अस्तित्व में आया।

इस तरह ब्रिटिश शासन से स्वतंत्रता का यह आनन्द विभाजन की पीड़ा और हिंसा के साथ हमारे सामने आया।

© JCERT not to be republished

माउंटबेटन योजना—

3 जून 1947 ई. को भारत में अंतिम ब्रिटिश वायसराय लॉर्ड माउंटबेटन ने 3 जून की योजना का प्रस्ताव दिया। इसे माउंटबेटन योजना भी कहा जाता है। इसमें विभाजन स्वायत्तता दो नए राष्ट्रों को संप्रभुत्ता और अपना संविधान बनाने के लिए उनके अधिकार के सिद्धान्त शामिल थे।

- महात्मा गाँधी को रवीन्द्रनाथ टैगोर ने 1915 ई. को "महात्मा गाँधी" की उपाधि दी थी।
- महात्मा गाँधी को "राष्ट्रपिता" कहकर 4 जून 1944 ई. को सुभाष चन्द्र बोस ने संबोधित किया।
- राजकुमार शुक्ला ने महात्मा गाँधी को सबसे पहले "बापू" कहकर पुकारा।
- महात्मा गाँधी के राजनीतिक गुरु गोपाल कृष्ण गोखले थे।
- महात्मा गाँधी के नेतृत्व में आंदोलन—

चंपारण आंदोलन	—	1917 ई.
खेड़ा आंदोलन	—	1918 ई.
खिलाफत आंदोलन	—	1919 ई.
असहयोग आंदोलन	—	1920 ई.
भारत छोड़ों ओदोलन	—	1942 ई.

© JCERT not to be republished

जरा सोचिये—

- महात्मा गाँधी की 150वीं जयंती कब मनाई गई ?

राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं की भूमिका—

गाँधीजी द्वारा राष्ट्रीय आंदोलन का नेतृत्व संभालने के साथ ही राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी बढ़ी। इसका कारण यह था कि गाँधी जी की सत्य, अंहिसा और सत्याग्रह की नीति महिलाओं के स्वभाव के अनुकूल थी।

असहयोग आंदोलन के दौरान सरोजिनी नायडू के नेतृत्व में राष्ट्रीय स्त्री संघ की स्थापना की गई थी। बंगाल में उर्मिला और बंसती देवी के नेतृत्व में महिलाओं के एक समूह ने खादी वस्त्रों की बिक्री कर सरकार की अवज्ञा की थी। 1929 ई. में उर्मिला देवी की अध्यक्षता में नारी सत्याग्रह समिति का गठन किया गया। मद्रास के पूर्वी गोदावरी जिले में दुबरी सुबासम नामक महिला ने देव सेविका नामक स्त्री संघ की स्थापना की थी। गाँधी जी के आंदोलन में इसने सक्रिय भूमिका निभाई।

लतिका घोष नामक महिला ने साइमन कमीशन के विरोध में महिलाओं की एक रैली का आयोजन किया, उसने महिला राष्ट्रीय संघ की स्थापना की। सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान महिलाओं ने बड़ी संख्या में भाग लिया।

भारत के क्रांतिकारी आंदोलन में महिलाओं ने बड़ी भूमिका निभाई। कल्पना दास, प्रीती लता वाडेकर, सुनीति चौधरी, शांतिघोष और बीनादास ने भी क्रांतिकारी गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लिया। लीलानाग नामक महिला ने दीपावली संघ की स्थापना की थी जिसमें स्त्रियों को शस्त्र चलाने का प्रशिक्षण दिया जाता था।

1942 ई. के आंदोलन में उषा मेहता ने गुप्त रेडियों का संचालन कर आंदोलनकारियों का मार्गदर्शन किया। गाँधी जी की गिरफ्तारी के बाद उनकी पत्नी कस्तूरबा ने आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया।

इस प्रकार राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं ने सक्रिय भूमिका निभाई उन्होंने अपनी अपूर्व राष्ट्रीय भावना का परिचय दिया। कई ने तो देश की आजादी के लिए हथियार भी उठा लिए। जब देश आजाद हुआ तो नए भारत के निर्माण में भी उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सुचेता कृपलानी पहली महिला मुख्यमंत्री बनी। विजया लक्ष्मी पंडित ने संयुक्त राष्ट्रसंघ में भारत का नेतृत्व किया। इंदिरा गाँधी देश की पहली महिला प्रधानमंत्री बनी। उन्हें आयरन लेडी के नाम से भी जाना जाता है।

© JCERT not to be republished

झारखण्ड में राष्ट्रीय आंदोलन

- राँची में रौलेट एक्ट और जलियाँवाला बाग हत्याकांड के खिलाफ आंदोलन का नेतृत्व गुलाब तिवारी ने किया।
- 1920-21 ई. में असहयोग आंदोलन के समय गाँधीजी स्वयं झारखण्ड आये। राँची में भीमराज वंशीधर मोदी धर्मशाला में ठहरे और उसके सामने विदेशी कपड़ों की होली जलाई गई। असहयोग आंदोलन में टाना भगतों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी उन्होंने ब्रिटिश सरकार को भूमिकर देना बंद कर दिया।
- राँची जमशेदपुर, डाल्टनगंज, हजारीबाग, धनवाद, देवघर, दूमका, गिरीडीह आदि नगर स्वदेशी वस्तुयें को अपनाने तथा विदेशी वस्तुओं को बहिष्कार करने का प्रमुख केन्द्र बन गया।
- सविनय अवज्ञा आंदोलन में झारखण्ड के लोगों ने सक्रिय भूमिका निभाई। 13 अप्रैल 1930 ई. को लगभग 200 लोगों ने झारखण्ड में 50 स्थानों पर नमक बनाया। हजारीबाग कृष्ण वल्लभ सहाय ने खजांची तालाब के निकट नमक बनाकर नमक कानून के चुनौती दी।
- अगस्त क्रांति में भी झारखण्ड की भूमिका रही। पूर्ण स्वतंत्रता के लिए 10 अगस्त को टाटानगर में पूर्ण हड़ताल की गयी थी। अगस्त की हजारीबाग में आंदोलन शुरू हुआ।

जानने योग्य शब्द

राष्ट्रवाद	Nationalism
स्वशासन	Self Governement
पाश्चात्य	Western
स्नातक	Graduate
सामाजिक सुधार	Social Reform
उदारवादी	Liberal
उग्रवादी	Extremist
क्रांतिकारी	Revolutionary
जनांदोलन	Mass movement
क्रांति	Revolution
असहयोग	Non-Cooperation
सविनय अवज्ञा	Civil Disobealience
भारत छोड़ा	Quit India

© JCERT not to be republished

स्मरणीय तथ्य

- कांग्रेस की स्थापना 1885 ई. में हुई।
- राजा राममोहन राय द्वारा संवाद कौमुदी व मिरातुल अखबार जैसे पत्रों का संपादन।
- भारतीय राष्ट्रीयता के अग्रदूत राजा राममोहन राय थे।
- धन निस्कासन का सिद्धान्त दादा भाई नौरोजी द्वारा दिया गया।
- ब्रह्म समाज के संस्थापक राजा राममोहन राय थे।
- रामकृष्ण मिशन की स्थापना स्वामी विवेकानन्द द्वारा की गयी।
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को ए.ओ.ह्यूम एक सेफ्टी वाल्व के रूप में बनाना चाहते थे।
- कांग्रेस के बेलगाँव अधिवेशन (1924 ई.) के अध्यक्ष महात्मा गाँधी थे।
- 1940 ई. का कांग्रेस अधिवेशन रामगढ़ में हुआ।
- राष्ट्रीय आंदोलन के तीन चरण थे।
- प्रथम चरण उदारवादियों का युग था।
- तृतीय चरण के प्रमुख नेता लाल–बाल–पाल एवं अरविन्द घोष थे।
- तिलक द्वारा गणपति उत्सव एवं शिवाजी उत्सव की शुरूआत की गयी।
- 1911 ई. में बंगाल विभाजन रद्द कर दिया गया।
- दांडी मार्च द्वारा सविनय अवज्ञा आंदोलन की शुरूआत हुई।
- बंगाल विभाजन का ही परिणाम स्वदेशी तथा बहिष्कार आंदोलन था।
- 1907 ई. में कांग्रेस का विभाजन हुआ।
- जालियाँवाला बाग हत्याकांड 13 अप्रैल 1919 ई. को हुआ।
- गाँधीजी ने केसर–ए–हिन्द की उपाधि वापस की।
- रविन्द्रनाथ टैगोर ने ''नाइटहुड'' की उपाधि वापस की।
- सविनय अवज्ञा आंदोलन 1934 ई. में वापस ले लिया गया।
- पाकिस्तान 14 अगस्त एवं भारत 15 अगस्त 1947 ई. को अस्तित्व में आया।
- द्वितीय गोलमेज सम्मेलन (7 सितम्बर 1931 ई.) में गाँधीजी ने कांग्रेस का नेतृत्व किया।

अभ्यास कार्य

I. रिक्त स्थानों की पूर्ति करें—

(a) राजा राममोहन राय ने .... समाज की स्थापना की।

(b) राष्ट्रीय आंदोलन के तीसरे चरण को .... युग के नाम से जाना जाता है।

© JCERT not to be republished

(c) बंगाल विभाजन .... ई. में हुआ।

(d) भारत छोड़ो आंदोलन के प्रस्ताव को स्वीकृति .... को मिली।

(e) दूसरे गोलमेज सम्मेलन में कांग्रेस का नेतृत्व .... ने किया।

(f) .... ई. सविनय अवज्ञा आंदोलन वापस ले लिया गया।

(g) कांग्रेस का विभाजन .... ई. में हुआ।

(h) सविनय अवज्ञा आंदोलन की शुरूआत .... द्वारा हुई।

(i) रविन्द्रनाथ टैगोर ने .... की उपाधि वापस की।

(j) कांग्रेस के प्रथम अधिवेशन में .... प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

उत्तर—(a) ब्रह्म समाज, (b) गाँधीवादी युग, (c) 1905 ई., (d) 8 अगस्त 1942 ई., (e) गाँधीजी, (f) 1934 ई., (g) 1907 ई., (h) दांडी मार्च, (i) नाइटहुड, (j) 72

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. 1940 ई. के मुस्लिम लीग के प्रस्ताव में क्या माँग की गयी थी ?

Hints—देखें स्वतंत्रता अवज्ञा विभाजन

प्रश्न 2. गाँधीजी द्वारा नमक कानून तोड़कर किस आंदोलन की शुरूआत की गयी ?

Hints—देखें सविनय अवज्ञा आंदोलन

प्रश्न 3. राष्ट्रीय आंदोलन को कितने चरण में बाँटा गया ?

Hints—देखें राष्ट्रीय आंदोलन के चरण

प्रश्न 4. महात्मा गाँधी को केसर-ए-हिन्द की उपाधि किसने दी ?

Hints—देखें Page.22 यह भी जाने

प्रश्न 5. रॉलेट एक्ट के बारे आप क्या जानते है ?

Hints—देखें रौलट एक्ट

© JCERT not to be republished

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(1) जालियाँवाला बाग हत्याकांड के बारे में संक्षेप में लिखें।

(2) राष्ट्रवाद के उदय में पाश्चात्य शिक्षा तथा समाचार पत्रों की क्या भूमिका रही।

(3) राष्ट्रीय आंदोलन के द्वितीय चरण को उग्रवादी युग क्यों कहा गया? कुछ उग्रवादी नेता का नाम बतायें।

उत्तर—(1) Hints—देखें जालियाँवाला बाग हत्याकांड

(2) Hints—देखें राष्ट्रवाद का उदय

(3) Hints—देखें द्वितीय चरण